Saraswati Chalisa Lyrics in Hindi

॥ दोहा ॥

जनक जन न पद कमल रज, नज म तक पर धा र।
ब द मातु सर वती, बु ध बल दे दाता र॥
पूणू जगतम या ततव,म हमाअ मत अनंतु।ु
रामसागर के पाप को, मातु तुहु अब ह तु॥ु

॥ चौपाई ॥

जय ी सकल बु ध बलरासी। जय सव अमर अ वनासी ॥ १
जय जय जय वीणाकर धार । करती सदा सुहंुससवार ॥२
पचतुभुज धार माता।सकल व वअ दर व याता ॥ ३
जग म पाप बु ध जब होती। जब ह धम क फ क योती ॥ ४
तब ह मातु ले नज अवतारा। पाप ह न करती म ह तारा ॥ ५
बा मी क जी थे बहम ानी। तव साद जानैसंसारा॥६
रामायण जो रचे बनाई। आ द कवी क पदवी पाई ॥ ७
का लदास जो भये व याता। तेरे कृ पा ि ट से माता ॥ ८
तुलुसीसूरूआ द व धाना।भयेऔरजो ानी नाना ॥ ९
त ह हं न और रहेउ अवल बा। के वल कृ पा आपक अ बा ॥ १०
करहु कृ पा सोइ मातु भवानी। दु खत द न नज दास ह जानी ॥ ११
पु करैअपराधबहूता।ते हनधरइ चत सु दरमाता॥१२
राखु लाज जननी अब मेर । वनय क बहु भां त घनेर ॥ १३
म अनाथतेरे अवलंबा।कृपाकरउजयजय जगदंबा ॥ १४
मधुकैटभजोअ तबलवाना।बाहुयु ध व णू ते ठाना ॥ १५
समरहजारपांच म घोरा। फरभीमुखु उनसे न हं मोरा ॥ १६
मातु सहाय भई ते ह काला। बु ध वपर त कर खलहाला ॥ १७
ते ह ते मृ यु भई खल के र । पुरु वहु मातु मनोरथ मेर ॥ १८
चंडंमु डजोथे व याता।छणमहंुंसंहंारेउ ते हमाता॥१९
र तबीज से समरथ पापी। सुरु -मु न दय धरा सब कांप ी ॥ २०
काटेउ सर िजम कदल ख बा। बार बार बनवउं जगदंबा ॥ २१
जग स ध जो शंुभं नशंुभं ा। छन म बधे ता ह तू अ बा ॥ २२
भरत-मातु बु ध फे रेउ जाई। रामच बनवास कराई ॥ २३
ए ह व ध रावन वध तुमु क हा। सुरु नर मु नसबकहंुंसुखुद हा॥२४
को समरथ तव यश गुनु गाना। नगम अना दअनंतंबखाना॥२५
व णु अज सक हं न मार । िजनक हो तुमुर ाकार ॥२६
र त दि तका और शता ी। नाम अपार है दानव भ ी ॥ २७
दुगुम काजधरापरक हा।दुगुा नामसकल जग ल हा ॥ २८
दुगु आ दहरनीतूमाता।कृपाकरहुजब जबसुखु दाता॥२९
नृपृको पतजोमारनचाहै।काननम घेरे मृगृनाहै॥३०
सागर म य पोत के भंगे । अ त तूफू ान न हं कोऊ संगेे ॥ ३१
भूतू तबाधायादुःुखम ।होद र अथवा संकंटम ॥३२
नामजपेमंगंलसबहोई।संशंयइसम करइ न कोई ॥ ३३
पु ह नजोआतुरुभाई।सबैछां इपूजू ए ह माई ॥ ३४
करैपाठ नतयहचाल सा।होयपु सु दर गुणुईसा॥३५
धूपू ा दकनैवै यचढावै।ै संकं टर हतअव य हो जावै ॥ ३६
भि त मातु क करै हमेशा। नकट न आवै ता ह कलेशा ॥ ३७
बंदं पाठ कर शत बारा। बंदं पाश दूरू हो सारा ॥ ३८
करहु कृ पा भवमिु त भवानी। मो कहं दास सदा नज जानी ॥ ३९

॥ दोहा ॥

मातासूरूजकिा ततव,अंधंकारमम प।
डूबन ते र ा करहु,पं न म भव-कू प॥
बलबु ध व यादेहंुंमो ह,सुनुहुसर व त मातु।ु
अधमरामसागर हंतुमु,आ यदेउपुनातु॥ु

astronetra.com